साहित्यसंहिता
Available at http://sahityasamhita.org/
ISSN- 2454-2695
Volume 02 Issue 09
September 2016

# काली काली बादलों और

शशिकांत निशांत शर्मा 'साहिल'

काली काली बादलों और
नील गगन से
बारिस की बूंदें
जब गिरती हैं
रिम-झिम रिम-झिम
तब यह धरती नाच उठती हैं
छम छम छम
बारिश की बूंदें
उस गगन से
खेलती हैं
हमारे संग
आँख मिचौली
बदलें काली-काली
उसी दूर गगन से
वर्षा की रानी
करती बारिस
गिरता पानी
मिटता प्यास
इस धरती का
मिलती नव जीवन
इस धरा को
बारिस की बूंदें
जब गिरती
हमें लगता
मनो वर्षा की रानी
बढ़ाकर अपना हाथ

ISSN- 2454-2695
Volume 02 Issue 09
September 2016

*छूकर हमारे गाल*
*सहलाकर हमारे बाल*
*करती हम से बात*
*जब-जब आती बरसात*
*आकर कहती*
*धीरे से कान में*
*आओ मेरे पास*
*थम जाती अपनी साँस*
*बिना सोचे*
*बिना समझे*
*चाहते गगन को छूना*
*वर्षा रानी के पास*
*चुपके से पहुचना*
*दिल में लिए आस*
*करता नित प्रयास*
*पर सब बेकार*
*मिलती हार*
*तो फिर एकबार*
*वर्षा की रानी*
*रचती नई कहानी*
*कहती हमसे*
*चढ़ जाओ ऊपर*
*बारिस की बुँदे पकर*
*या पानी की वो रस्सी*
*जो नील गगन से लटकती*
*जब चड़ने की*
*हर कोशिश हुई नाकाम*
*तो सुझा एक काम*
*बनाकर कागज की कस्ती*

साहित्यसंहिता
Available at http://sahityasamhita.org/
ISSN- 2454-2695
Volume 02 Issue 09
September 2016

*जो थी सस्ती*
*उम्र की मस्ती*
*मौसम का उमंग*
*दोस्तों के संग*
*लिखकर अपने अरमान*
*बात सारी मन की*
*छोड़ दिया बारिस की पानी में*
*सोचकर की पहुँच जाएगी*
*वर्षा रानी के पास*
*क्यों की थोरी ही देर*
*पहले देखा*
*आसमान से*
*लटकी सत रंगों वाली*
*पानी की मोती नली*
*हाँ, वही पनसोखा*
*जो सागर से पानी खिंच*
*बरसाती धरती पे पानी*
*संतुस्ट होकर अपनी प्रयास से*
*खो गए खेल खेल में*
*आपस की मस्ती मेलजोल में*